

आओ प्राण प्यारे साईं दर्शन अपना दीजे  
प्यासी चातकी तरस रही हूं कृपा वर्षा कीजे॥

तुम हो दीन जनों के बन्धू बिन कारण कृपा के सिन्धू।  
हम अधमों को अपना करके सुजस जगत में लीजे॥

प्राण पपीहा पी पी बोले कहां प्रेम घन बरसत डोले  
जीवन साध पुजाओ मेरी रह रह हियां पसीजे॥

मेरी जीवन नौका प्यारे तांके तुम हो खैवन हारे  
डूबि न जाए विरह सिंधु में ले अब तीर धरीजे॥

जब जब भक्ति लुप्त हो जाए तुम तब सतिगुरु बनकर आए  
प्रेम चान्दनी फैला जग में कलि मल त्रास कटीजे॥

कथा सुधा का प्याला पिलाकर विषय गरल से वेगि उबारो  
तेरी मधु संजीवनी वाणी सुन सुन रघुवर नामु रटीजे॥

जीवन लाभ जगत में एही प्रभु पद पंकज होय स्नेही  
प्रेमामृत उपदेश तुम्हारा भर भर प्याला पीजे॥

चिर जीवो प्रभु मैगसि चन्दा समर्थ सत्गुर आनन्द कन्दा।  
सुजस मनोहर तेरा साईं गाय गाय नितु जीजे॥